श्रीमद्भगवद्गीता में निहित बुद्धि की अवधारणा एवं प्रकारों का अध्ययन

डॉ. सुरेन्द्र महतो
सहायक आचार्य, शिक्षापीठ,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

"गीता सुगीता कर्त्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।" *1- इस कथन के अनुसार श्रीमद्भगवद्गीता को भलीभाँति पढ़ लेने/समझ लेने पर समस्त ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। अर्थात् गीता को समझ लेने पर अन्य शास्त्रों की कोई आवश्यकता नहीं है तथा गीता को नहीं समझने पर भी अन्य शास्त्रों में समय लगाना नासमझी है। अतः भारतीय वाघ्मय में श्रीमद्भगवद्गीता ही एक ऐसा ग्रन्थ है जिसका अनुवाद विश्व की अनेकों भाषाओं में उपलब्ध होता है। इस ग्रन्थ को जो व्यक्ति जिस भाव से अध्ययन करता है उसे वैसे ही फल की प्राप्ति होती हैं। अर्थात् यह ग्रंथ सम्पूर्ण भारतीय शास्त्रों का निचोड़ है। इसकी प्रत्येक आवृत्ति में एक नई अनुभूति की प्राप्ति होती है। श्रीमद्भगवद्गीता के 61श्लोकों में बुद्धि शब्द का प्रयोग प्राप्त होता है। बुद्धि शिक्षा मनोविज्ञान की दृष्टि से ही नहीं अपितु भारतीय दर्शन का भी केन्द्र बिन्दु रहा है। बुद्धि का सन्दर्भ व्याकरण,दर्शन,साहित्य आदि में भी प्राप्त होता है। बुद्धि के अतिरिक्त अन्य मनोवैज्ञानिक तथ्यों जैसे- ध्यान,सीखना,व्यक्तित्व,स्मरण,विस्मरण,स्वप्न,रूचि,अभिवृत्ति आदि भी प्राप्त होते हैं जबकि मेरा उद्देश्य यहाँ श्रीमद्भगवद्गीता में निहित बुद्धि की अवधारणा तथा भेद को आधुनिक मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में उद्घाटित करना रहा है।*

तकनीकी शब्द -

व्यवसायात्मिका - निश्चयात्मिका अर्थात् निर्णयात्मिका।
सात्विक - सत्व गुण से सम्बद्ध
राजस - रजो गुण से सम्बद्ध
तामस - तमो गुण से सम्बद्ध

उद्देश्य -

प्रस्तुत पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-

1. बुद्धि की अवधारणा को स्पष्ट करना।
2. बुद्धि के सिद्धान्तों को स्पष्ट करना।
3. बुद्धि के प्रकारों को स्पष्ट करना।
4. श्रीमद्भगवद्गीता में निहित बुद्धि की परिभाषा का अन्वेषण करना।
5. श्रीमद्भगवद्गीता में निहित बुद्धि के भेदों का अन्वेषण करना।
6. श्रीमद्भगवद्गीता में निहित बुद्धि तथा बुद्धि की आधुनिक संकल्पनाओं का समन्वय करना।

मनुष्य स्वभाव से जिज्ञासु एवं चिन्तनशील प्राणी है। जिज्ञासा पूर्ति के लिए वह इधर-उधर भ्रमण करता रहा हैं परिणाम स्वरूप भोजन संग्रह करने से प्रारम्भ कर उसने चाँद-तारों तक पहुँच बना ली हैं। मानव सृष्टि के सभी प्राणियों में सबसे अधिक बुद्धिमान है अर्थात् यूँ कह सकते हैं कि बुद्धि ही एक ऐसी विशिष्ट तत्त्व मानव में अन्तर्निहित है जिस कारण वह श्रेष्ठता

[1]म.भा. भीष्मपर्व अ. 43/1 एवं संक्षिप्त गीता पृ.-8

©Indira Gandhi National Open University

उन्हें प्राप्त है। कहा भी गया है-**"बुद्धिर्यस्य बलं तस्य।"**[2]जिस प्रकार बुद्धि मानव के विकास का परिचायक है ठीक इसी प्रकार किसी भी समाज या राष्ट्र के विकास का परिचायक वहाँ की शिक्षा व्यवस्था है। जो उनके आर्थिक,सामाजिक एवं राजनैतिक उन्नति को गति प्रदान करती है अर्थात् शिक्षा की आवश्यकता एवं सार्थकता स्वतः सिद्ध है। सभी क्षेत्रें में विकास अनवरत गति से चल रहा है परिणामतः शिक्षा प्रक्रिया भी इससे अछूता नही है। शिक्षा शब्द संज्ञा एवं क्रिया दोनों रूपों में प्रयुक्त होती है। शिक्षा का जब संज्ञा के रूप में प्रयोग किया जाता है तो उसे एक विषय के रूप में स्वीकार किया जाता है जो अभी विकासशील अवस्था में है। जब यह प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है तो यह पूर्ण विकसित रूप में हमारे समक्ष है।

सुस्थिर विकास के लिए लोगों का शिक्षित होना परम आवश्यक है। लोगों को शिक्षित करने के लिए शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ करना आवश्यक होता है जो देश-काल एवं परिस्थिति के अनुरूप परिवर्तनशील होता है। शिक्षा किसी भी राष्ट्र अथवा समाज का परिचायक होती है। जिससे राष्ट्र समृद्ध व सम्पन्न होता है। कहा भी गया है - **'किं-किं न साधयति कल्पलतेव विद्या'**[3]अर्थात् विद्या से सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है। यहाँ तक कि शान्ति और सुख ही नहीं परा शान्ति अर्थात् मोक्ष को भी शीघ्रता से ज्ञान के द्वारा प्राप्त करने का तरीका गीता में वर्णित है। ज्ञान के कई समानार्थक शब्द प्रयोग में लाये जाते हैं जैसे- विद्या,शिक्षा आदि। लेकिन तीनों ही शब्द स्थान-काल-प्रसङ्गआदि के आधार पर विविध अर्थों के द्योतक होते हैं। कठोपनिषद् में यम-नचिकेता संवाद में विद्या के दो प्रकार बताए गये हैं- परा और अपरा अर्थात् अध्यात्मिक और भौतिक। शिक्षा को शास्त्रें में विद्या अथवा ज्ञान प्राप्ति का साधन बताया गया है। **'स्वरवर्णाद्युच्चारणं प्रकारो यत्र शिक्ष्यते उपदिसते सा शिक्षा'**[4] -अर्थात् उच्चारण सिखाने की प्रक्रिया शिक्षा है। शिक्षा को वेद अर्थात् ज्ञान प्राप्ति का साधन कहे जाने से इसे वेद अर्थात् ज्ञान का अंग,वेदाङ्गकहा गया है।

शिक्षा अथवा शिक्षाशास्त्र एक नवीन संकल्पना है जो शिक्षा प्रक्रिया के विविध क्षेत्रें सीखना-सिखाना,मनोवैज्ञानिक,ऐतिहासिक,दार्शनिक,वैज्ञानिक,तकनीकी का समग्र रूप है। मनो-विज्ञान का आविर्भाव दर्शन शास्त्र से हुआ माना जाता है। मनोविज्ञान की एक शाखा शिक्षा मनोविज्ञान के रूप में स्थापित हो चुकी है। शिक्षा मनोविज्ञान में अधिगमकर्त्ता के व्यवहार के अन्तर्गत-बालक अर्थात् अधिगमकर्त्ता का वृद्धि एवं विकास,सीखना,बुद्धि,व्यक्तित्व,सामंजस्य इत्यादि का प्रमुखता से अध्ययन किया जाता है। प्रायः लोगों की अवधारणा है कि शिक्षा अथवा शिक्षा मनोविज्ञान का विकास पाश्चात्य देशों में हुआ है। जबकि भारतीयों ने हजारों वर्षों पूर्व इन बिन्दुओं पर गहनता पूर्वक चिन्तन ही नहीं किया अपितु इसे कसौटी पर कसकर सिद्धान्तों का प्रतिपादन भी किया है।

बुद्धि को सृष्टि की आठ प्रकृतियों में भी गिना जाता है जैसे- पृथ्वी,जल,अग्नि,वायु,आकाश,मन,बुद्धि तथा अहंकार।[7/4] यह बुद्धि बुद्धिमानों के विवेक अर्थात्-सत् और असत् में भेद स्पष्ट करने वाली होती है। सूक्ष्म,सूक्ष्मतर आदि पदार्थों को समझने वाले अन्तःकरण की ज्ञानशक्ति का नाम बुद्धि है।[7/4] यह बुद्धि आदि प्रकृति से उत्पन्न होती है। सांख्य के मत में बुद्धि चौबीस तत्त्वों में परिगणित है जो प्रकृति के अप्रकट अवस्था के सूचक है। ये चौबीस तत्त्व इस प्रकार कहे गए हैं-पंचमहाभूत-पृथ्वी,जल,अग्नि,वायु,आकाश। फिर अहंकार,बुद्धि तथा तीनों गुणों की अव्यक्त अवस्था आती है। इसके पश्चात् पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ-नेत्र,कान,नाक,जीभ तथा त्वचा। पाँच कमेन्द्रियाँ – वाणी,पाद,हाथ,गुदा तथा लिंग। मन,संकल्प-विकल्पात्मक अन्तस्थ इन्द्रिय माना जाता है। पुनः इन इन्द्रियों के पाँच विषय हैं- गंध,स्वाद,रूप,स्पर्श तथा ध्वनि। इच्छा,द्वेष,सुख तथा दुःख नामक अन्तः क्रियाएँ (विकार) हैं जो स्थूल देह (शरीर) के पाँच महाभूतों की अभिव्यक्तियाँ है। चेतन तथा धर्म द्वारा प्रदर्शित जीवन के लक्षण सूक्ष्म शरीर अर्थात् मन,अहंकार तथा बुद्धि के प्राकट्य हैं। जिसकी बुद्धि यानि आत्माका उपाधि स्वरूप अन्तःकरण लिप्त नहीं होता- अनुपात नहीं करता यानी 'मैंने अमुक कार्य किया है इसका मुझे यह परिणाम मिलेगा' इस प्रकार जिसकी बुद्धि लिप्त नहीं होती;वह सुबुद्धि (Intellect) है ।

---

[2]चाणक्यनीति - 10/16

[3]सुभाषितरत्नाकर, विंध्याध्ययन-6

[4]यू.जी.सी. संस्कृत पृ.-37

©Indira Gandhi National Open University

श्रीमद्भगवद्गीता में दुर्बुद्धि,सुबुद्धि,एक बुद्धि- अनेक बुद्धि,कारण के रूप में बुद्धि दोषकरण के रूप में बुद्धि की अवधारणा को स्पष्ट किया गया है। सत्-असत् के बीच भेद करने वाले ज्ञान के रूप में बुद्धि,विवेक के रूप में बुद्धि,ज्ञान को प्राप्त कराने वाले कारण के रूप में बुद्धि,प्रकृति से उत्पन्न हुई,प्रकृति अथवा सृष्टि के एक प्रधान तत्त्व के रूप में बुद्धि को परिभाषित किया गया है।

बुद्धि शब्द व्याकरण की दृष्टि से स्त्रीलिंग शब्द है जो बुध् धातु के क्तिन्[5] प्रत्यय से बना है जिसका अर्थ होता है बोध अथवा ज्ञान होना। इसके कई पर्याय है जैसे **मनीषा,धिषणा,धी,प्रज्ञा,शेमुषी,मति** इत्यादि।[6] जो न्यूनाधिक बुद्धि के अर्थ में प्रयोग होते देखे जाते है। वहीं वेदान्त सार में **निश्चयात्मक अन्तःकरण की वृत्ति को बुद्धि** कहा गया है।[7] जबकि तर्क भाषा में **अर्थ को प्रकाशित करने वाला व्यापार को बुद्धि** कहा है।[8] आचार्य भट्टतोत ने **बुद्धि,मति,सुनीति,प्रज्ञा तथा प्रतिभा** को परिभाषित करते हुए इसे तात्कालिक कहा है।[9] वेदव्यास ने श्रीमद्भगवद्गीता में **बुद्धि को व्यावसायात्मिका अर्थात् निश्चयात्मिका** ही माना है।[10]

व्यक्तियों की पारस्परिक भिन्नता जानने में बुद्धि एक मुख्य निर्मिति है। किसी व्यक्ति की बुद्धि जानने से यह भी ज्ञात होता है कि वह अपने पर्यावरण के अनुरूप अपने व्यवहार को किस प्रकार अनुकूलित करता है।

सामान्यजन बुद्धि के स्वरूप के बारे में जो समझते हैं,मनोवैज्ञानिकों द्वारा उससे बिल्कुल भिन्न ढंग से इसे समझा जाता है। यदि हम किसी बुद्धिमान व्यक्ति के व्यवहारों का प्रेक्षण करें तो हमें प्राप्त होता है कि उसमें मानसिक सतर्कता,हाजिर जवाबी,शीघ्र सीख लेने की योग्यता और संबंधों को समझ लेने की योग्यता जैसे अनेक गुण होते हैं।

ऑक्सफोर्ड शब्दकोश ने बुद्धि को प्रत्यक्षण करने (perceiving),सीखने (learning),समझने (understanding) और जानने (knowing) की योग्यता के रूप में परिभाषित किया है। बुद्धि के प्रारंभिक सिद्धांतकारों ने भी इन्हीं गुणों द्वारा बुद्धि को परिभाषित किया है। अल्फ्रेड बिने (Alfred Binet) बुद्धि के विषय पर शोधकार्य करने वाले पहले मनोवैज्ञानिकों में से एक हैं। उन्होंने बुद्धि को अच्छा निर्णय लेने की योग्यता,अच्छा बोध करने की योग्यता और अच्छा तर्क प्रस्तुत करने की योग्यता के रूप में परिभाषित किया। वेक्षर (Wechsler),जिनका बनाया गया बुद्धि परीक्षण बहुत व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है,ने बुद्धि को उसकी प्रकार्यात्मकता के रूप में समझा अर्थात उन्होंने पर्यावरण के प्रति अनुकूलित होने में बुद्धि के मूल्य को महत्त्व प्रदान किया। वेक्षर के अनुसार बुद्धि व्यक्ति की वह समग्र क्षमता है जिसके द्वारा व्यक्ति सविवेक चिंतन करने, सोद्देश्य व्यवहार करने तथा अपने पर्यावरण से प्रभावी रूप से निपटने में समर्थ होता है। कुछ अन्य मनावेज्ञैानिकों, जैसे - गार्डनर (Gardner) और स्टर्नबर्ग (Sternberg) का सुझाव है कि एक बुद्धिमान व्यक्ति न केवल अपने पर्यावरण से अनुकूलन करता है बल्कि उसमें सक्रियता से परिवर्तन और परिमार्जन भी करता है।

"बुद्धि एक समुच्चय या सार्वजनिक क्षमता है जिसके सहारे व्यक्ति उद्देश्यपूर्ण क्रिया करता है विवेकशील चिन्तन करता है तथा वातावरण के साथ प्रभावकारी ढंग से समायोजन करता है।"

"बुद्धि से तात्पर्य संज्ञानात्मक व्यवहारों के सम्पूर्ण वर्ग से होता है जो व्यक्ति में सूझ द्वारा समस्या समाधान करने की क्षमता,नई परिस्थितियों के साथ समायोजन करने की क्षमता,अमूर्त रूप से सोचने की क्षमता तथा अनुभवों से लाभ उठाने की क्षमता को दिखाता है।"

---

[5]संस्कृत हिन्दी शब्दकोश-शिवराम आप्टे.पृ.-718

[6]अमरकोष- पृ.सं.-18

[7]वेदान्त सार- पृ.सं.-17

[8]तर्कभाषा-पृ.सं.-28

[9]स्मृतिः अतीत विषय-पृ.सं.-212

[10]श्रीमद्भगवद्गीता-2/41 पृ.सं.-57

©Indira Gandhi National Open University

यदि हम गीता की बात करें तो श्रीमद्भगवद्गीता ही नहीं अन्य 92 गीता भी प्राप्त होती हैं। परन्तु इसमें श्रीमद्भगवद्गीता को ही आधार बनाया गया है। जो श्रीकृष्णद्वैयपायन वेद-व्यास द्वारा रचित प्रसिद्ध महाकाव्य महाभारत के भीष्म पर्व अध्याय - 25 से 42 तक का अंश है। इसमें क्रमशः प्रथम अध्याय से - 18वें अध्याय तक – 47 + 72 + 43 + 42 + 39 + 47 + 30 + 28 + 34 + 42 + 55 + 20 + 34 + 27 + 20 + 24 + 28 + 78 = 700 कुल पद्य है। जिनमें से बुद्धि शब्द का प्रयोग जिन-जिन श्लोकों में किया गया है वे इस प्रकार है- अध्याय 2- श्लोक संख्या- 39,41,44,52,53,65,66। अध्याय 3- श्लोक संख्या - 1,40,42 = 3,अध्याय-7 श्लोक संख्या 4 तथा 10 = 2,अध्याय- 10 श्लोक संख्या - 4 = 1,अध्याय-13 श्लोक संख्या 52 = 1,अध्याय- 18 श्लोक संख्या - 17,29,30,34,32 कुल 5 = कुल 20 श्लोकों में बुद्धि शब्द का प्रयोग किया गया है। प्रत्ययुक्त बुद्धि शब्द - 29 तथा उपसर्ग युक्त बुद्धि का प्रयोग-12 श्लोकों में किया गया है। श्लोक संस्कृत में होने के कारण श्रीशांकरभाष्य गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित हिन्दी अनुवाद को ही अध्ययन का आधार बनाया गया है।

बुद्धि की परिभाषा अथवा अर्थ या अवधारणा को समझने के लिए विभिन्न मनोवैज्ञानिक परिभाषाओं को उद्धृत करने के पश्चात् श्रीमद्भगवद्गीता के अध्याय-10 श्लोक संख्या - 4 पृ. संख्या-246-

बुद्धिज्ञानसम्मोहः क्षमा सत्यं दमः शमः।
सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च।।[11]

बुद्धिः अन्तःकरणस्य सूक्ष्माद्यार्थावबोधन सामर्थ्यम्।[12] अर्थात् सूक्ष्म, सूक्ष्मतर आदि पदार्थों को समझने वाली अन्तःकरण की ज्ञान शक्ति का नाम बुद्धि है। इसके समर्थन में वेदान्त सार में उल्लिखित-निश्चयान्तःकरणवृत्ति बुद्धिः[13] अर्थात् अन्तःकरण को निश्चय प्रदान करने वाली वृत्ति ही बुद्धि है। तथा तर्कभाषा में परिभाषित-अर्थप्रकाशो बुद्धिः। अर्थ को बताने वाली वृत्ति बुद्धि है। अमरकोश में उद्धृत- "बुद्धिर्मनीषाधिषणा धीः प्रज्ञा,शेमुषी मतिः" भी बुद्धि की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त प्रतीत होता है।

बुद्धि के सिद्धान्त के विषय में भी मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त द्विकारक (द्वि तत्त्व),समूह कारक (समूह तत्त्व) तथा बहुकारक (बहु तत्त्व) सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है।

व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन।
बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम्।।[14]

अर्थात् कल्याण मार्ग में व्यवसायात्मिका-निश्चय स्वभाव वाली बुद्धि एक ही है। परन्तु जो अव्यवसायी हैं उनकी वे बुद्धियाँ बहुत भेदों वाली और प्रतिशाखा भेद से अनन्त होती है।

बुद्धि की अवधारणा,सिद्धान्त के उपरान्त बुद्धि के भेदों को मनोवैज्ञानिकों में से कतिपय को स्वीकृत प्रमुख तीन भेद अमूर्त/सैद्धान्तिक (Abstract/Theoretical Intelligence),सामाजिक (Social) तथा मूर्त/व्यावहारिक (Concrete/Practical) को उद्धृत कर उनके सापेक्ष श्रीमद्भगवद्गीता के 18वें अध्याय में बुद्धि के भेद तथा उदाहरणों को उद्धृत करना प्रसंगानुकूल है। यथा-

बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव गुणतस्त्रिविधं शृणु।
प्रोच्यमानमशेषेण पृथकत्वेन धनञ्जय।[15]

---

[11]श्रीमद्भगवद्गीता - 10/4
[12]शांकरभाष्य
[13]वेदान्त सार
[14]श्रीमद्भगवद्गीता - 2/41
[15]श्रीमद्भगवद्गीता-18/29

©Indira Gandhi National Open University

अर्थात् बुद्धि के सत्त्वादि गुणों के अनुसार तीन प्रकार के भेद हैं। उदाहरणस्वरूप-

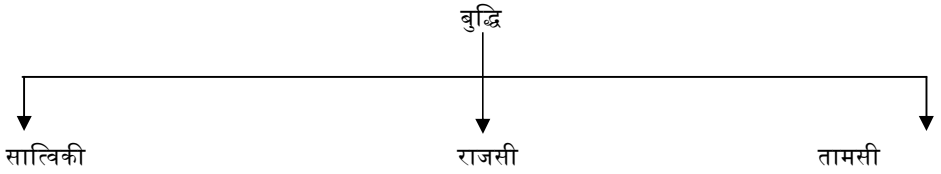

सात्विकी बुद्धि -

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये।
बन्धं मोक्षं च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्विकी।।[16]

अर्थात् सुख-दुःख को जानने की जिज्ञासा,करने योग्य,न करने योग्य,भय तथा अभय,बंधन (समस्या) और मोक्ष (समाधान) के विषय में चिन्तन करने वालों में सात्त्विकी बुद्धि सक्रिय रहती है। इस प्रकार के व्यक्ति चिन्तक,कवि आदि होते है। इसे आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने अमूर्त अथवा शास्त्रीय या सैद्धान्तिक बुद्धि कहा है।

राजसी बुद्धि -

यया धर्माधर्मं च कार्यं चाकार्यमेव च।
अयथावत्प्रजानाति बुद्धिः सा पार्थ राजसी।।[17]

अर्थात् जिस बुद्धि के द्वारा मनुष्य शास्त्रोक्त धर्मों को और शास्त्र निषेध अधर्म को,कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य को यथार्थ रूप से निर्णयपूर्वक नहीं जानता वह बुद्धि राजसी हैं। यह सामाजिक बुद्धि के सापेक्ष परिभाषित है।

तामसी बुद्धि-

अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता।
सर्वार्थान्विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी।।[18]

अर्थात् जो तमोगुण से ढ़की हुई बुद्धि अधर्म को भी धर्म मान लेती है तथा जानने योग्य अन्यान्य समस्त पदार्थों को भी जो विपरीत ही समझती है वह बुद्धि तामसी नाम से अभिहित है। जो पूर्ण रूप से तो नहीं किन्तु अंशतः मूर्त बुद्धि के समान प्रतीत होता है।

श्रीमद्भगवद्गीता में- "सूक्ष्म,सूक्ष्मतर आदि पदार्थों को समझने वाली अन्तःकरण की ज्ञान शक्ति का नाम बुद्धि है (बुद्धिः अन्तकरणस्य सूक्ष्माद्यार्थावबोधन सामर्थ्यम्)। तद्पश्चात् पाश्चात्य दृष्टि में बुद्धि के सिद्धान्त के विषय में चर्चा है। जहाँ एक कारक,द्विकारक,समूह कारक तथा बहु कारक सिद्धान्त की बात की गई है। श्रीमद्भगवद्गीता में भी व्यवसायात्मिका अर्थात् निश्चयात्मिका बुद्धि एक ही है तथा अव्यवसायिका अनन्त है। पुनः गुण के आधार पर सात्विकी,राजसी एवं तामसी बुद्धि के रूप में तीन प्रकार की बुद्धि को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है।

---

[16]श्रीमद्भगवद्गीता-18/30

[17]श्रीमद्भगवद्गीता-18/31

[18]श्रीमद्भगवद्गीता-18/32

©Indira Gandhi National Open University

अतः श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित बुद्धि के स्वरूप तथा भेद आधुनिक बुद्धि के स्वरूप एवं भेद या प्रकार का ही बीजभूत प्रतीत होता है। हमारे भारतीय ग्रन्थों में इसी तरह के आधुनिक सभी वैज्ञानिक तथा मनोवैज्ञानिक तथ्य पूर्व से ही विद्यमान है। आज आवश्यकता है आधुनिक विभिन्न विषयों जैसे- शिक्षाशास्त्र,अभियान्त्रिकी,चिकित्सा विज्ञान,समाजशास्त्र,अर्थशास्त्र आदि विषय के अध्येताओं को भारतीय ज्ञान परम्परा में निहित तत् तत् सम्बद्ध शास्त्रें के अध्ययन,अनुसंधान तथा नवाचार द्वारा उसे विश्व पटल पर उपस्थापित करने की जिससे हमारे ज्ञान परंपरा को उचित स्थान मिले तथा हमारी नई पीढ़ी इससे परिचय प्राप्त कर गौरवान्वित महसूस कर सके। इस दिशा में यह मेरा छोटा सा प्रयास है।

सन्दर्भ ग्रन्थ -

1. आप्टे,वामन शिवराम - संस्कृत हिन्दी कोश-नाग पब्लिसर्श दिल्ली-7,2002
2. श्रीशांकरभाष्य - श्रीमद्भगवद्गीता- गीता प्रेस,गोरखपुर- 60वां संस्करण 2007
3. गोयंका जयदयाल- ” अंग्रेजी ” पंचम संस्करण 2005
4. संस्कृत कार्यालय,संक्षिप्त गीता,श्री अरविन्द आश्रम पुदुच्चेरी,प्रथम संस्करण -1999
5. श्री हरिकृष्णदास योयंदका - श्रीमद्भगवद्गीता,गीता प्रेस,गोरखपुर 23वां सस्करण-2000
6. प्रभुपाद स्वामी भक्ति वेदान्त ए. जी. श्रीमद्भगवद्गीता यथारूप- भक्ति वेदान्त बुक ट्रस्ट-जुहू,मुम्बई-400049-1990
7. गुर्जर महादेव जनार्दन-अमरकोश-भारतीय विद्या प्रकाशन-दिल्ली-7-2001.
8. झा रुद्रधर- तर्कभाषा- अमर भारती प्रकाशन,वाराणसी-1994
9. विदेहानन्द,ब्रह्मस्थानन्द स्वामी-वेदान्तसार-रामकृष्णमठ,नागपुर,मुम्बई-2003
10. त्रिपाठी के. सी. - वेदान्त सार- साहित्य भण्डार,मेरठ-2009
11. लाल एवं जोशी- शिक्षामनोविज्ञान एवं प्रारंभिक सांख्यिकी- आर. लाल. बुक डिपो,मेरठ-2007-08.
12. माथुर एस. एस. शिक्षा मनोविज्ञान- विनोद पुस्तक मन्दिर,आगरा-21
13. सुलेमान मुहम्मद- उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान-मोती लाल बनारसी दास,दिल्ली-7,प्रथम संस्करण-2002
14. सिंह अरूण कुमार- शिक्षा मनोविज्ञान - भारती भवन,नई दिल्ली-2,पुनःमुद्रण-2005
15. कक्षा - 12 मनोविज्ञान -NCERT, New Delhi-16

©Indira Gandhi National Open University